भजन

तर्ज़...जिंदगी की न टूटे लड़ी

मेहर धनी की बरस रही,बूंदें अर्श वालों ने लई
इस नींद निगोड़ी को छोड़ो,आई जागने की घड़ी

1–खातिर रूहों की आयें है वो
जाम अर्श का लायें है वो
माया का जीव न पी सके
पिये वो जो रूह अर्श की होए
जिनकी निसबत है न्यामत मिली

2–जिनको सुख है अर्श का यहां
उनके धनी बड़े मेहरबां
भर भर प्याले पिलाते हैं वो
ऐसा सुख भी न मिलता कहां
टूटी त्रैगुन की हथकड़ी

3–जागनी का ब्रह्मांड है ये
सतगुरू बन के जगा ही रहे
आई कयामत कायमी का दिन
मुर्दे कब्रों से उठा ही रहे
धाम चलने की आई घड़ी